आस्था हमारा सम्बल

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आस्था का अर्थ है श्रद्धा, विश्वास। विश्वास से सृष्टि चल रही है। सम्बल का अर्थ है प्रेरक, सहारा देने वाला। किसी भी व्यक्ति के लिए विश्वास या श्रद्धा सबसे बड़ी ताकत होती है। बिना श्रद्धा या विश्वास के जीवन सम्भव नहीं है। शासन संचालन से लेकर गृहस्थ जीवन तक हर जगह श्रद्धा या विश्वास को महत्व देना पड़ता है। एक परिवार में जितने भी सदस्य होते हैं उन सभी में एक दूसरे पर आस्था करनी पड़ती है। पति–पत्नी, भाई–बहिन, दादा–दादी और अन्य परिवार के सदस्यों को जीवन यापन करने के लिए एक दूसरे पर भरोसा करना पड़ता है। पति पत्नी के भरोसे और पत्नी पति के भरोसे बड़े से बड़ा कार्य कर डालती है। माता–पिता पुत्र पर विश्वास रखकर के उसको पाल पोषकर बड़ा करते है। उनका यह विश्वास रहता है कि बालक बड़ा होकर के उनके लिए सहारा बनेगा। जैनदर्शन में श्रद्धा को बहुत महत्व दिया गया है। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्राणि मोक्ष मार्गः कहकर श्रद्धा को महत्व दिया गया है। दार्शनिक दृष्टि से यदि देखा जाये तो सबसे बड़ी विश्वास की चीज अपनी आत्मा खुद है। यद्यपि आत्मा दिखाई नहीं देती, लेकिन सभी आत्मा पर विश्वास करते है। आत्मा का स्वरूप शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है। कर्म से बंधे होने के कारण आत्मा शरीरव्यापी रहती है। लेकिन जैसे ही कर्म से मुक्त होती है वह अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो जाती है। आत्मा, पुनर्जन्म, बन्धन, कर्म आदि पर विश्वास करना यह सिद्ध करता है कि श्रद्धा का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। मन्दिरों और देवालयों में पत्थर पर आस्था रखकर के हम ईश्वर के रूप में उसकी पूजा करते हैं।

पत्थर को तरासकर ईश्वर की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। जितने भी आस्तिक लोग है सभी अपने श्रद्धा और विश्वास के अनुसार पूजा–पाठ किया करते है। मानव को मानव बनाने के लिए श्रद्धा की आवश्यकता है। भारत ने विश्व को पंचशील का सिद्धान्त दिया है। यह सिद्धान्त सभी देशों के बीच आस्था जाग्रत करने वाला सिद्धान्त था। आस्था के ही आधार पर इस दृश्य जगत से परे अदृश्य जगत पर भी लोग विश्वास करते है। सूक्ष्म जगत बहुत बड़ा है। भीतरी

जगत आत्मा का जगत है। भीतर की रसायनशाला को जानने के लिए ध्यान और योग की आवश्यकता होती है। विज्ञान के द्वारा प्रदान की गयी सुविधाओं के परे यदि हम जाकर के देखें तो उस सूक्ष्म जगत का ज्ञान होता है। भारत देश में आन्तरिक जगत को बहुत महत्व दिया है। बाहर के देशों में जितना विज्ञान को महत्व दिया जाता है उससे कही अधिक भारत ने आन्तरिक जगत को महत्व दिया है। यही कारण है कि जब विश्व के लोगों को शान्ति की आवश्यकता होती है तो वे भारत की तरफ रुख करते है और यहां पर आकर उनकी श्रद्धा और भक्ति पुष्ट होती है। जेल में केदियों को परिवर्तित करने के लिए भी रूपान्तरण की आवश्यकता होती है। जो प्रशिक्षक जेलों में कैदियों को प्रशिक्षण देते हैं उनके सामने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देते हैं जिससे कैदियों को यह महसूस होने लगता है कि मैंने जो कुछ किया था वह बहुत गलत किया। धीरे–धीरे कैदियों की हिंसावृत्ति छूट जाती हैं और वे सामान्य नागरिक की तरह जीवन व्यतीत करने लगते है। व्यक्ति में रूपान्तरण की प्रक्रिया चलती रहती है। आवश्यकता है उसे बोध कराने की। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने कहा हैं कि जो कार्य तुम करते हो उसे ईश्वरार्पण बुद्धि से करो। ऐसा करने से तुम्हारे अन्दर फल की इच्छा नहीं होगी। कार्य अच्छा हो या बुरा वह कार्य होता है। यदि कार्य अच्छा है तो उससे सामाजिक लाभ होता है। यदि कार्य बुरा है तो समाज में उसकी निन्दा होती है। आस्था के आधार पर मनुष्य जीवन–यापन करते है। उत्थान और पतन का सम्बन्ध भी कर्म से जुड़ा हुआ है। यह प्राकृतिक नियम है। असफलता से कभी घबराना नहीं चाहिए। किसी की आस्था पर चोट नहीं आनी चाहिए। कर्म करने में कभी निरुत्साहित नहीं होना चाहिए। कर्म में आस्था रखनी चाहिए। युवाओं को विशेष रूप से यह ध्यान रखना चाहिए कि जीवन निर्माण में जितनी भी बाधाएं आये उनका सामना करे पुरुषार्थ पर आस्था रखकर के आगे बढ़े। युवा लोग आज बुरी संगति में फंसकर नशीले पदार्थों का सेवन कर जीवन को बर्बाद कर रहे है। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। बच्चों को पाल–पोषकर बड़ा करने के लिए माता–पिता ने अपना सबकुछ दांव पर लगा देते है। पुत्र का भी कार्य है कि वह माता–पिता को ईश्वर के समान मानकर उनकी सेवा करे। मन्दिर में जाये या न जाये यदि वे माता–पिता की सेवा करते हैं तो ईवर प्रसन्न होता है। माता–पिता साक्षात् जीवित भगवान है। गुरु, माता–पिता, श्रेष्ठ लोग और समाज के

साधु व्यक्ति के आशीर्वाद से जीवन उन्नत बनता है। जीवन में गुरु के प्रति आस्था अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि गुरु ज्ञान का दाता होता है। गुरु ही ज्ञान के द्वारा बच्चे का दूसरा जन्म कराता है। गुरु ही ईश्वर का ज्ञान कराता है। कबीरदासजी ने लिखा है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

इस प्रकार आस्था और सम्मान से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। सकारात्मक ऊर्जा मानस में परिवर्तन करती है। यदि विचार नकारात्मक रहते हैं तो विकास नहीं हो पाता। भावना और विचार में सकारात्मकता लाने के लिए आस्था की आवश्यकता होती है। इसलिए आस्था सबसे बड़ा सम्बल है।